"सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव"

(जयपुर जिले के विशेष संदर्भ में)

डॉक्टर ऑफ फिलॉ   सफी (शिक्षा) की

उपाधि हेतु प्रस्तुत

संक्षिप्त शोध प्रारूप

पर्यवेक्षक :
डॉ. अनीता उपाध्याय

शोधकर्त्री :
शिल्पा शर्मा

शिक्षा एवं शारीरिक विभाग

श्याम विश्वविद्यालय,

लालसोट, दौसा, राजस्थान

2019

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
1.	परिचय	1–3
2.	साहित्य का पुनरावलोकन	3–6
3.	शोध के उद्धेश्य	6–7
4.	शोध का क्षेत्र	7–9
5.	शोध प्रसंरचना	9–10
6.	निर्देशन पद्धति एवं न्यादर्श चयन	10
7.	अध्यायीकरण	11
8.	संदर्भ ग्रंथ सूची	12–14

परिचय :–

मानव जीवन में शिक्षा का विशेष महत्व है। प्रत्येक व्यक्ति शिशु के रूप में कुछ प्रवृत्तियों को लेकर जन्म लेता है। जन्म के समय बालक असामाजिक एवं असहाय होता है। उसकी न कोई संस्कृति होती है न कोई आदर्श।

किन्तु जैसे–जैसे वह बड़ा होता जाता है वह सामाजिक प्राणी बनता जाता है। उसकी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति भोजन द्वारा की जाती है, किन्तु उसे सामाजिक और सांस्कृतिक मानव बनाने में शिक्षा की भूमिका होती है। शिक्षा व्यक्ति की नैसर्गिक प्रवृतियों का शोधन और मार्गन्तीकरण करके उसे समाज का एक सक्रिय सदस्य बनाती है, जिसे वह अपने उत्तदायित्वों का निर्वहन कुशलतापूर्वक कर सकता है। शिक्षा सीखना नहीं वरन् मस्तिष्क की शक्तियों का अभ्यास व विकास है। जिन दो श्रेष्ठ विधियों से शिक्षा प्राप्त होती है, वे है, ज्ञान के केन्द्र व जीवन के संघर्ष। इस प्रकार शिक्षा सभ्यता एवं संस्कृति का विकास निरन्तर करती है। इस प्रकार शिक्षा बालक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास करने में सहयोग देती है। शिक्षा की महत्वपूर्ण सामग्री वातावरण है, विद्यार्थी को जैसा वातावरण मिलता है, उसका विकास उसी प्रकार से होता है। विद्यालय शिक्षा का औपचारिक अभिकरण है। औपचारिक रूप से शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। विद्यालय के वातावरण पर ही बालक के व्यक्तित्व का विकास निर्भर करता है।

शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों के जीवन का प्रमुख कारक है। आज के इस बदलते समय में विज्ञान व तकनीकी शिक्षा के द्वारा आगे बढ़ने की आवश्यकता है। आज प्रत्येक माता–पिता अपने बच्चों से सही अपेक्षा रखते है, कि वे शिक्षा के क्षेत्र में उच्च लक्ष्य प्राप्त करें। यदि बालक की शैक्षिक

योग्यता ज्ञान एवं कौशल उच्च श्रेणी के है, तो वह लक्ष्यों को निश्चित रूप से प्राप्त कर सकता है।

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उसके सामाजिक एवं आर्थिक स्तर का बहुत प्रभाव पड़ता है। सामाजिक एवं आर्थिक स्तर के व्यक्तियों के समूह जाति या वर्ग की अन्य समूहों या वर्ग के सन्दर्भ में उसकी स्थिति व्यक्ति की समाज में सांस्कृतिक, राजनीतिक संगठन में सहभागिता आदि से संम्बन्धित है और यही क्षमता उसे समाज में एक नई पहचान दिलाती है तथा सामाजिक आर्थिक स्तर का निर्धारण करती है। सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों का अभिप्राय उस पद से है, जो व्यक्ति या परिवार समुदाय की औसत संस्कृति उपलब्धि में सहभागिता के परिणामस्वरूप प्राप्त करता है। इस प्रकार सामाजिक आर्थिक स्तर वह स्थिति है, जिस पर व्यक्ति किसी समूह में अपने लिंग, आयु, परिवार वर्ग, व्यवसाय, विवाह तथा उपलब्धि के कारण होता है तथा सामाजिक आर्थिक स्तर का निर्धारण माता–पिता, पिता का व्यवसाय, आय के स्त्रोत आदि पर निर्भर करता है।

शैक्षिक उपलब्धि Academic Achievement दो शब्दों से मिलकर बना है। इस शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य शिक्षा के क्षेत्र से प्राप्त परिणामों से होता है। शैक्षिक कार्य का अंतिम परिणाम ही शैक्षिक उपलब्धि है जो विद्यार्थियों को सीखने के बारे में अहम् जानकारी प्रदान करती है।

शैक्षिक उपलब्धि शिक्षा से सम्बन्धित विद्यार्थियों के ज्ञान, कौशल को प्रदर्शित करती है। अतः एक निर्धारित एवं नियोजन शिक्षा कार्यक्रम में बालक शिक्षा प्राप्त करता है तथा ज्ञानार्जन करता है। इसी ज्ञानार्जन के मापन को शैक्षिक उपलब्धि कहते है।

शैक्षिक उपलब्धि किसी भी विद्यार्थी को विद्यालय के विषयों पर ज्ञान प्राप्त करने तथा अपनी योग्यता को बढ़ाने पर निर्भर है जिसका मूल्यांकन विद्यालय अधिकारियों द्वारा उपलब्धि परीक्षा के आधार पर होता है। उपलब्धि परीक्षायान्तोमानक होते है या अध्यापक द्वारा बनाये जाते है।

दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है, शैक्षिक योग्यता का अर्थ छात्रों की उपलब्धि है। परीक्षा के प्राप्तांकों का मूल्यांकन छात्र की योग्यता के आधार पर होता है, जो परीक्षा के प्राप्तांकों के माध्यम से निर्धारित की जाती है। इसी माध्यम से एक छात्र की दूसरे छात्र से तुलना की जाती है।

साहित्य का पुनरावलोकन :–

मैनें अपने शोध कार्य को व्यवस्थित, सत्य और प्रमाणिक बनाने के लिए शोध कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित साहित्य का अध्ययन किया। सम्बन्धित साहित्य के अन्तर्गत शोध विषय से सम्बन्धित पुस्तके, पत्र–पत्रिकाऐं, लेख व वेब साइट आदि के माध्यम से शोध समस्या से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया गया, जिसे मुझे अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिली।

पुस्तकें :–

- शर्मा, प्रभा–शिक्षा मनोविज्ञान
- शर्मा, रामनाथ–उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान
- अरोड़ा, रीता–शिक्षण एवं अधिगम के मनोसामाजिक आधार
- गुप्ता, पी.सी.–भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएं

- व्यास, हरिशचन्द्र–अधिगम और विकास के मनोसामाजिक आधार
- भटनागर, आर.पी.–शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व
- गोयल सुनील, गोयल संगीता–भारत में सामाजिक परिर्वतन
- कोठारी, सी.आर.–अनुसंधान विधिशास्त्र विधियाँ और तकनीकी
- पाठक, पी.डी.–शिक्षा मनोविज्ञान
- शर्मा, आर.ए.डी.–शिक्षण–अधिगम का मनोविज्ञान

शोध ग्रंथ :–

- सरकारी एवं गैर–सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलबिध का अध्ययन
- माध्यमिक स्तर के उच्च एवं निम्न शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों की आकांक्षा का अध्ययन
- उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर की उनकी सृजनात्मकता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

शोध जर्नल्स :–

- Buch, M.B. (1974, 1972-1978, 1983-1988, 1988-1992,). First, Second, Third, Forth survey of Research in Education. Entre Advanced Studey in Education Faculty of Education and Psychology. M.S. University, Baroda
- Bhartiya Shiksha Shodh Patrika, Indian Institute of Education Research. Indian Institute of Research. Lucknow:-19(2) Jan-June(1984)

- Dissertation Avstracts International: The Humanities and social science volume 57,58 (1997),69,70(2009)
- Higher Educational Research And Development. Vol-19, issue Oct.-1997
- Indian Journal of Educational Research. Vol-20,23,24,28
- Journal of The Indian Academy of Applied Psyschology. January 1998 vol-14)
- M.Ed/Ph.D Reported (1960-1982) Jaipur: University of Rajasthan
- Research in Education:In Rajasthan Education Department, Rajasthan, Bikaner
- Sharma, S.K. (1993-98,1998-2003) Fifth, Sixth Survey of Educational Researc. NCERT vol I,II New Delhi
- Asian Journal of Psychology and Education Vol. 50, year 2017

पत्र–पत्रिकाऐं :–

- आर्थिक परिदृश्य: वर्तमान एवं भविष्य
- शिक्षा विमर्श शैक्षिक चिंतन एवं संवाद पत्रिका
- अनुसंधान एवं अध्ययन
- भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका
- भारतीय आधुनिक शिक्षा
- अविष्कार मासिक विज्ञान पत्रिका (एन.आर.डी.सी.) प्रकाशन

वेबसाईट्स :

- **www.google.com**
- **www.education.nic.in**

- www.shabdkosh.com
- https://books.google.co.in

शोध के उद्देश्य :–

किसी भी कार्य की सफलता उसके उद्देश्यों के सफल क्रियान्वयन पर निर्भर करती है। उद्देयय क्रियाओं को निश्चित दिशा एवं मार्गदर्शन प्रदान करते है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए मेरे इन विषय पर किये जाने वाला शोध कार्य निम्नखिलित उद्देश्यों से प्रेरित है :–

1. विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
2. छात्रों के सामाजिक आर्थिक स्तर का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
3. छात्राओं के सामाजिक आर्थिक स्तर का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
4. निजी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
5. सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
6. प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
7. उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
8. शिक्षित अभिभावक के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

9. अशिक्षित अभिभावक के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

10. छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

11. राजकीय एवं निजी विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

12. उच्च एवं निम्न आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

शोध का क्षेत्र :–

मेरा शोध कार्य जयपुर जिले व जयपुर शहर के सरकारी व गैर विद्यालयों के विद्यार्थियों पर किया जायेगा।

जयपुर जिले की भौगोलिक स्थितिः–

जयपुर जिला राजस्थान के पूर्वी भाग में 26.23 से 27.5' उत्तरी अक्षांश तथा 74.55 से 76.50' पूर्वी देशान्तर रेखाओं के बीच स्थित है। इसके उत्तर में राजस्थान का सीकर जिला व हरियाणा का महेन्द्रगढ़ जिला दक्षिण में टोंक जिला पूर्व में अलवर दौसा और सवाई माधोपुर जिले तथा पश्चिम में नागौर और अजमेर जिले स्थित है। राजस्थान राज्य की राजधानी जयपुर जिले का कुल क्षेत्रफल 11.143 वर्ग किलोमीटर है, जिसका नगरीय क्षेत्रफल 737.59 वर्ग किलोमीटर व ग्रामीण क्षेत्रफल 10,405.41 वर्ग किलोमीअर है, जयपुर जिले में कुल 19 विधानसभा क्षेत्र है। 13 तहसील, 488 पंचायते है अध्ययन क्षेत्र की स्थिति और विस्तार पर गौर करे तो जयपुर जिला राजस्थान के मध्य भाग में स्थित है। जयपुर शहर समुद्र तल से 431 मीटर 1417 फीट की उंचाई पर स्थित है जिसके परिणामस्वरूप साल भर अपेक्षाकृत उच्च तापमान के साथ अर्ध शुष्क

जलवायु होती है। तीन ओर से अरावली पर्वत श्रृंखला से घिरा होने के कारण भी जयपुर का सौन्दर्य रमणीय लगता है जिसके कारण जयपुर पर्यटन स्थल के रूप में भी का केन्द्र है।

जयपुर जिले का ऐतिहासिक परिचयः–

आमेर नरेश सवाई जयसिंह ने 18 नवम्बर, 1727 को जय नगर के नाम से जयपुर की स्थापना की। जयपुर का वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य था। राजस्थान एकीकरण के चर्तुथ चरण 30 मार्च 1949 में जयपुर को सम्मिलित किया गया एवं तब से ही जयपुर ही राजस्थान की राजधानी है। सिटी ऑफ आइसलैण्ड, गुलाबी नगर, पिंक सिटी, रंग श्री द्वीप, राजस्थान की राजधानी, पूर्व का पेरिस, हेरीटेज सिटी, वैभव द्वीप, पन्ना नगरी दूसरा वृंदावन, रत्न नगरी, भारत का पेरिस इत्यादि नामों से जयपुर शहर को जाना व पहचाना जाता है। यदि हम युगान्तर के हिसाब से जयपुर की बात करें तो जयपुर का इतिहास काफी प्राचीन है जयपुर का निर्माण मध्य काल के अंत मे हुआ था किन्तु जयपुर स्थापना करने वाले शासक का वंश कई शताब्दी पूर्व माना जाता है। ऐसा माना जाता है। कि कांचवाड़ा परिवार ग्वालियर से यहां आकर बसे थे जा अपने आप को भगवान श्री राम के पुत्र की संतान मानते थे। इस वंश का संस्थापक दुलहराय (तेजकरण) था, जो 1137 इस्वी में बड़गुर्जरों को हराकर नवीन ढूंढाड़ राज्य की स्थापना की। सन 1207 में इसी वंश के कोकीलदेव ने मीणाओं से आमेर पर विजय प्राप्त कर आमेर को अपनी राजधानी बनाया और तब से 17वीं शताब्दी तक आमेर राजधानी रहा। 18वीं शताब्दी के शुरूआत में असी वंश के शासक जयसिंह द्वितीय या सवाई जयसिंह ने जयपुर नगर की स्थापना करके आमेर के स्थान पर जयपुर को राजधानी

बनाया और साथ ही इनके द्वारा कई महलों एवं वैद्यशालाओं का निर्माण करवाया

जयपुर जिले के जनांकिकी

जयपुर शहर नगर निगम द्वारा शासित है और राजस्थान राज्य केन्द्र शासित प्रदेश में स्थित है। जनगणना भारत की अंतिम रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2011 में जयपुर की जनसंख्या 3,047,163 थी जिनमें महिला एवं पुरूष कमशरू 1,603,125 और 1,443,038 थी। जयपुर की वर्तमान 2022–23 की जनसंख्या अनुमानित जनसंख्या 7,685,041 है वहीं पुरुषों की अनुमानित जनसंख्या 4,022,774 है तो महिलाओं की जनसंख्या 3,662,267 है। शिक्षा के क्षेत्र में जयपुर शहर में कुल साक्षर 2,215,535 है, जिनमें से 1,246,245 पुरुष है जबकि 969,290 महिलाऐं सम्मिलित है। जयपुर शहर की औसत साक्षरता दर 83.33 प्रतिशत है जिसमें पुरूष 76.65 प्रतिशत है तो महिलाओं की साक्षरता दर 89.33 प्रतिशत से पुरूषों से अधिक है।

शोध प्रसंरचना :–

प्रस्तुत शोध में इस विषय पर ''विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि वाले परिवारों का प्रभाव'' किये जाने वाला शोध कार्य व्यवस्थित हो सके इसके लिए एक शोध प्रारूप का निर्माण किया जायेगा। शोध विषय की प्रकृति को देखते हुए अन्वेषणात्मक व विवरणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया जायेगा। इसके पश्चात्

शोध से सम्बन्धित तथ्य व आकड़े संकलित करने के लिए मैं अवलोकन, साक्षाकार–अनुसूची का प्रयोग किया जायेगा।

इसके अतिरिक्त शोध कार्य तर्कपूर्ण और तथ्यात्मक बनाने के लिए द्वितीयक स्त्रोत के रूप में शोध विषय से सम्बन्धित पूर्व शोध ग्रन्थ, पुस्तके, पत्र–पत्रिका, सरकारी–गैर सरकारी संस्थाओं की रिपोर्ट विभिन्न वेब साइटों को प्रयोग में लाया जायेगा।

निदर्शन पद्धति एवं न्यादर्श चयन :–

शोध विषय की प्रवृति को देखते हुए तथ्यात्मक सूचनाऐं व आंकड़े प्राप्त करने के लिए समग्र में से निदर्शन पद्धति उत्तरदाताओं का चयन किया जायेगा। शोध कार्य की प्रवृति के आधार पर निदर्श के रूप में सरकारी एवं गैर सरकारी स्कूलों के विद्यार्थियों से उद्देश्यात्मक निदर्शन के माध्यम से 500 (250+250) उत्तरदाताओं के रूप में विद्यार्थियों (छात्र व छात्राओं) का दैव निदर्शन पद्धति के माध्यम से उपयोग करके चयन किया जायेगा, जिससे जानकारी प्राप्त की जा सकेगी।

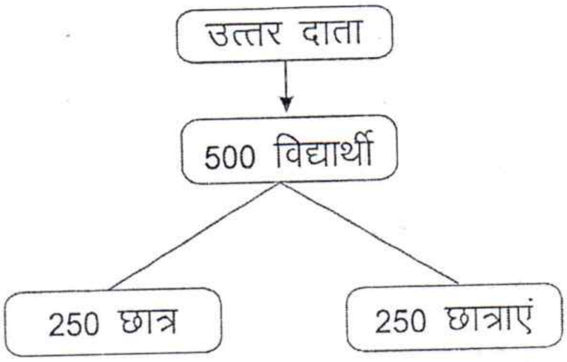

अध्यायीकरण :—

प्रथम अध्याय : मेरे द्वारा सम्पूर्ण शोध कार्य को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने के लिए इसे निम्नलिखित अध्याय में विभक्त किया जायेगा।

प्रथम अध्ययन

- शोध अध्ययन परिचय

द्वितीय अध्याय :

- साहित्य का पुनरावलोकन

तृतीय अध्याय :

- विद्यार्थियों की सामाजिक पृष्ठभूमि

चतुर्थ अध्याय :

- विद्यार्थियों की आर्थिक पृष्ठभूमि

पंचम् अध्याय :

- विद्यार्थियों की पारिवारिक पृष्ठभूमि

षष्ठम् अध्याय :

- शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि में सम्बन्ध

सप्तम् अध्याय :

- सारांश
- निष्कर्ष
- सुझाव

—: संदर्भग्रन्थ—सूची :—

1. अरोड़ा रीता मारवाड़ सुदेश, ''शिक्षा मनोवैज्ञानिक एवं सांख्यिकी'', शिक्षा प्रकाशन, जयपुर
2. **ओसवाल, भार्गव, '' सांख्यकि विधियां:, रमेश बुक डिपो जयपुर, 1996**
3. **बायति, जमनालाल, बच्चे और अभिभावक, सोनाली पब्लिकेशन, जयपुर, 2004**
4. बेस्ट जॉन डब्ल्यू, ''रिसर्च एन एजूकेशन'', प्रिटिंग हॉल प्रा.लि. नई दिल्ली, 1993 भार्गव, डॉ. सुनिता एवं उपाध्यक्ष डॉ, विनोद कुमार, ''अधिगम का मनोसामाजिक आधार एवं शिक्षण, अरिहन्त शिक्षाप्रकाशन, जयपुर, 2004
5. गुड सी. बी. एण्ड स्केट्स ''मैथड्स ऑफ रिसर्च,'' एप्लेटन क्ट्रेरी क्राप्टस, न्यूयार्क, 1934
6. गुड सी.बी. डिक्शनरी ऑफ एजुकेशन, मैकग्राहिल्स पब्लिशिंग कम्पनी, न्यू देहली, 1973
7. जे.एम. रमल, ''इन इन्ट्रोडेक्शन टू रिसर्च प्रोसीजन इन एजूकेशन,'' हार्पर न्यूयार्क, 1958
8. किरण, चांद, ''शिक्षा समाज और विकास,:: कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 2005
9. राबर्ट, एम.डब्ल्यू एवं ट्रेवर्स, 'इन इन्ड्रोडक्शन टू एजूकेशनल रिसर्च' न्यूयार्क मैकमिलन कम्पनी, 1964, पृ.सं.102
10. रमल, जेएम., 'इन इन्ड्रोडक्शन टू रिसर्च प्रोसीजर इन एजूकेशन' हार्पर न्यूयार्क, 1958, पृ.सं.311

11. बेस्ट, डब्ल्यू.जॉन, 'रिसर्च इन एजूकेशन' प्रिन्टिश हॉल ऑफ इण्डिया, पृ.सं.202
12. कार्टर वी गुड एस.बार एण्ड स्केट्स, 'मैथडालोजी ऑफ एजूकेशन रिसर्च' एप्लटन सेन्चुरी, क्राफ्टस 1954, पृ.सं.109
13. बुच, एम.बी. का पांचवा सर्वे, वोल्यूम द्वितीय, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, 1988–1992, पृ.सं.857
14. बुच, एम.बी. का पांचवा सर्वे, वोल्यूम द्वितीय, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, 1988–1992, पृ.सं.866
15. बुच, एम.बी. का पांचवा सर्वे, वोल्यूम द्वितीय, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, 1988–1992, पृ.सं.927
16. बुच, एम.बी. का पांचवा सर्वे, वोल्यूम द्वितीय, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, 1988–1992, पृ.सं.958
17. बुच, एम.बी. का पांचवा सर्वे, वोल्यूम द्वितीय, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, 1988–1992, पृ.सं.1016
18. इण्डियन एजूकेशनल रिव्यु, एन.सी.ई.आर.टी., वोल्यूम 24, पृ.सं. 37
19. बुच, एम.बी. का पांचवा सर्वे, वोल्यूम द्वितीय, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, 1988–1992, पृ.सं.1055
20. बुच, एम.बी. का पांचवा सर्वे, वोल्यूम द्वितीय, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, 1988–1992
21. इण्डियन एजूकेशनल एब्सट्रेक्स, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, 1988–1992, पृ.सं.35
22. इण्डियन एजूकेशनल एब्सट्रेक्स, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, 1988–1992, पृ.सं.1152

23. इण्डियन एजूकेशनल एब्सट्रेक्स, एन.सी.ई.आर.टी., वोल्यूम–6, जुलाई, 1999, पृ.सं.113
24. इण्डियन एजूकेशनल एब्सट्रेक्स, एन.सी.ई.आर.टी., वोल्यूम–6, जुलाई, 1999, पृ.सं.196
25. इण्डियन एजूकेशनल एब्सट्रेक्स, एन.सी.ई.आर.टी., वोल्यूम–6, जुलाई, 1999, पृ.सं.105
26. इण्डियन एजूकेशनल रिव्यू, एन.सी.ई.आर.टी., वोल्यूम–24, पृ.सं. 59
27. इण्डियन एजूकेशनल एब्सट्रेक्स, एन.सी.ई.आर.टी., वोल्यूम–6, नम्बर–2, जुलाई, 2006, पृ.सं.31
28. इण्डियन एजूकेशनल एब्सट्रेक्स, एन.सी.ई.आर.टी., वोल्यूम–6, नम्बर–2, जुलाई, 2006, पृ.सं.189
29. इण्डियन एजूकेशनल एब्सट्रेक्स, एन.सी.ई.आर.टी., वोल्यूम–6, नम्बर–2, जुलाई, 2006, पृ.सं.132
30. सिंह, डॉ. कृष्ण वीर, शोध, समीक्षा और मूल्यांकन, फरवरी 2010, वोल्यूम–द्वितीय, पृ.सं.162